आधुनिक भारत

मराठा राज्य

मराठा राज्य का उत्कर्ष **शिवाजी** के नेतृत्व में 17वीं शताब्दी में हुआ इसी समय मुगल साम्राज्य के विघटन की प्रक्रिया आरंभ हो गई। मुगलों के पतन के समय स्थापित स्वतंत्र राज्यों में मराठा राज्य सर्वाधिक शक्ति"ाली था। मुगलों द्वारा अहमदनगर का विलय मराठों के उदय का तात्कालिक राजनैतिक कारण था। **जहॉगीर** ने सर्वप्रथम मराठों का महत्व जानकार उन्हें मुगल सेना में रखा। अहमदनगर के मलिक अम्बर ने युद्ध व प्रशासन दोनों में मराठा प्रतिभा का उपयोग किया। शिवाजी के पिताजी शाहजी भोसले पहले अहमदनगर की सेवा में थे, बाद में वे बीजापुर की सेवा में चले गये, जहां उन्होंने कर्नाटक क्षेत्र में बडी जागीर प्राप्त की।

मराठों में आर्थिक व सामाजिक समानता थी। सोलहवी व सत्रहवी शताब्दी में चले धार्मिक आंदोलन ने इनमें एकता की भावना भर दी तथा ि"ावाजी ने मराठों में राजनैतिक चेतना व स्वतंत्रता की भावना भर दी। इस तरह मराठों के उत्थान में महाराष्ट्र की सामाजिक स्थिति एवं धार्मिक चेतना सहायक रही। गुरू रामदास ने मुगलों के विरूद्ध मराठों में राजनैतिक चेतना जाग्रत की व इसे ि"ावाजी के नेतृत्व प्रदान किया। **तुकाराम, रामदास, वामन पंडित, एकनाथ** आदि संतों ने मराठी भाषा में उपदेश दिए तथा प्रजातंत्र की ठोस भावना का विकास किया। महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति भी मराठों के उत्थान में सहायक रही। ि"ावाजी ने **'हिन्दू पादशाही'** अंगीकार की, गाय व ब्राम्हण की रक्षा का व्रत लिया और **'हिन्दू धर्मोद्धारक'** की पदवी धारण की। सन्त तुकाराम से ि"ावाजी प्रभावित थे। **तुकाराम** ि"ावाजी के समकालीन थे, उन्होने ि"ावाजी द्वारा दिए गए उपहारों को लेने से मना कर दिया था।

शिवाजी (1627–1680 ई.)

ि"ावाजी का जन्म 20 अप्रैल, 1627 को **पूना** के पास **शिवनेर** के किले में हुआ, इनके पिता **शाहजी भोसले** व माता का नाम **जीजाबाई** था। शाहजी ने जीजाबाई का परित्याग कर तुकाबाई मोहिते से विवाह कर लिया था। तुकाबाई मोहिते से शाहजी को व्यंकोजी नामक पुत्र हुआ, जो उनकी मैसूर व पूर्व कर्नाटक रियासत का उतराधिकारी हुआ। शिवाजी अपनी माता जीजाबाई व संरक्षक एवं ि"क्षक दादा **कोंण देव** के संरक्षण में पूना में अपने पिता की पैतृक जागीर में बडे हुए। 12 वर्ष की आयु में ि"ावाजी को पूना की पैतृक जागीर अपने पिता से प्राप्त हुई। 1641 ई. में ि"ावाजी का विवाह साईबाई निम्बालकर से हुआ। ि"ावाजी के गुरू का नाम **'समर्थ गुरू रामदास'** था, उन्होने **'दासबोध'** नामक पुस्तक लिखी।

ि"ावाजी ने सर्वप्रथम 1643 ई. में बीजापुर के **सिंहगढ किले** पर अधिकार किया। 1646 ई. में एक 'ाडयंत्र द्वारा **'पुरन्दर'** किले को **'नीलाजी नीलकण्ठ'** से छीन लिया। 1656 ई. में चन्द्रराव मोरे से बीजापुर में **तोरण** नामक पहाडी किला छीन लिया। यह ि"ावाजी की महत्वपूर्ण विजय थी। चन्द्रराव मोरे की हत्या कर दी गई। इससे ि"ावाजी का प्रभाव बडा। अप्रैल 1656 ई. में **राजगढ** (रायगढ़) के किले को जीतकर उसे ि"ावाजी ने अपनी राजधानी बनाया। ि"ावाजी 1656 ई. तक चाकन, कोंडाना, तिकोना, बारामती, सूपा, लोहागढ़ आदि अन्य किलों पर भी अधिकार कर चुका था। 1657 ई. में ि"ावाजी की मुगलों से पहली मुठभेड़ तब हुई जब ि"ावाजी बीजापुर की तरफ से मुगलों से लडा। ि"ावाजी को दबाने के लिए बीजापुर ने अफजल खॉ नामक योग्य सरदार को नियुक्त किया। अफजल खॉ ने ि"ावाजी को प्रतापगढ़ नामक स्थान पर मुलाकात के लिए बुलाया व उसे धोखे से मारने की योजना बनाई किन्तु ब्राम्हण दूत कृष्णजी भास्कर ने अफजल खॉ का उद्देश्य ि"ावाजी को बता दिया और ि"ावाजी ने चालाकी से मुलाकात के दौरान 2 नवम्बर, 1659 ई. को अफजल खॉ की हत्या कर दी।

1660 ई. में ि"ावाजी ने बीजापुर से **पन्हाला का दुर्ग** जीता। औरंगजेब ने 1660 ई. में शाहस्ता खॉ को दक्षिण का गवर्नर नियुक्त किया व उसे ि"ावाजी को समाप्त करने का आदे"ा दिया। 15 अप्रैल, 1663 ई. को ि"ावाजी ने रात्रि में चुपके से पूना में शाहस्ता खॉ के महल (लाल महल) पर आक्रमण कर दिया। शाहस्ता खॉ भाग गया, लेकिन उसकी दो अंगुलियां कट गई। 1664 ई. में ि"ावाजी ने सूरत पर आक्रमण कर शहर को लूटा। 1665 ई. में औरंगजेब ने आमेर के **मिर्जा राजा जयसिंह** को ि"ावाजी को कुचलने के लिए नियुक्त किया। जयसिंह ने पुरन्दर

को जीत लिया व रायगढ़ को घेर लिया अन्त में **24 जून, 1665** ई. को ि"ावाजी व जयसिंह के बीच **पुरन्दर की संधि** हुई।

पुरन्दर की सन्धि की शर्ते -

- ❖ शिवाजी ने 4 लाख हूण वार्षिक आय वाले तेईस किले मुगलों को सौंपे तथा ि"ावाजी के पास रायगढ सहित केवल बारह किले रहे, जिनकी वार्षिक आय एक लाख हूण थी।
- ❖ ि"ावाजी के पुत्र शम्भाजी को पांच हजार का मनसबदार बनाया व शम्भाजी को पांच हजार घोडों के दल के साथ बाद"ाह की सेवा में रहना होगा। ि"ावाजी को मुगल दरबार में निजी उपस्थिति से मुक्त कर दिया।
- ❖ ि"ावाजी ने बीजापुर के विरूद्ध मुगलों को सैनिक सहायता का वचन दिया।

1666 ई. में जयसिंह के कहने पर ि"ावाजी दीवाने खास में मुगल दरबार में आगरा आए किन्तु औरंगजेब ने उन्हे पांच हजारी मनसबदारों की पंक्ति में खडा कर दिया। इस अपमान से नाराज होकर ि"ावाजी दरबार से उठकर चले गये। ि"ावाजी को जयसिंह के पुत्र रामसिंह की देखरेख में **आगरा** के **जयपुर भवन** में कैद किया गया परन्तु वे चतुराई से अपने सौतेले भाई हीरोजी को अपने स्थान पर लेटाकर फरार हो गये। औरंगजेब ने ि"ावाजी के प्रस्ताव को स्वीकार कर ि"ावाजी को राजा की उपाधि दी तथा उसके पुत्र शम्भाजी को बरार में एक मनसब और जागीर दी। तीन वर्षो तक मुगलों से शांति के बाद 1670 ई. में ि"ावाजी व मुगलों में पुनः युद्ध हो गया। पुरन्दर की सन्धि में खोये हुए अनेक किलों को जीत लिया, जिसमें कोंडाना, सबसे महत्वपूर्ण था इसका नाम ि"ावाजी ने सिंहगढ़ रखा।

ि"ावाजी ने 15 जून, 1674 ई. को का"ाी के प्रसिद्ध विद्वान **गंगाभट्ट** या गागभट्ट से रायगढ़ के किले में राज्याभिषेक कराया व **छत्रपति** की उपाधि धारण की। महाराष्ट्र के कट्टर ब्राम्हण ि"ावाजी को क्षत्रिय नहीं मानते थे, इसलिए उन्होंने का"ाी के विद्वान गंगाभट्ट (वि"वे"वरजी) से राज्याभिषेक कराया। गंगाभट्ट ने ि"ावाजी को क्षत्रिय स्वीकार किया इस राज्याभिषेक के बारह दिन बाद ि"ावाजी की माता जीजाबाई का निधन हो गया। ि"ावाजी को दूसरी बार राज्याभिषेक **निश्चलपुरी गोस्वामी** नामक एक तांत्रिक ने 4 अक्टूबर, 1674 ई. को किया क्योंकि उनके अनुसार पहला राज्याभिषेक अ"ाुभ मुहुर्त में हुआ था। ि"ावाजी का अंतिम महत्वपूर्ण अभियान 1677–78 ई. में कर्नाटक अभियान था इसके दौरान ि"ावाजी ने गोलकुण्डा के मंत्री मदन्ना के माध्यम से गोलकुण्डा के सुल्तान से गुप्त समझौता कर बीजापुरी कर्नाटक को जीतने की योजना बनाई। ि"ावाजी ने दुरिया सारंग के नेतृत्व में नौसेना की निर्माण करवाया व 1669 ई. में ि"ावाजी ने जंजीरा के टापू के अबीसीनीयाई सीदियों पर भी आक्रमण किया लेकिन उन्हें जीत नहीं सका। ि"ावाजी ने अपने पुत्र शम्भाजी के व्यवहार से दुखी होकर उसे 1678 ई. पन्हाला के दुर्ग में नजरबंद रखा। अप्रैल 1680 ई. में रायगढ. के किले में ि"ावाजी का निधन हो गया।

शिवाजी का प्रशासन

शिवाजी का प्र"ाासन मुगल व दक्षिणी राज्यों के प्र"ाासन से प्रभावित था। निरंकु"ा लोकहितकारी था, प्र"ासन के शीर्ष पर राजा होता था जो **'छत्रपति'** की उपाधि धारण करता था। राजा अंतिम न्यायाधी"ा और सेनापति होता था। ि"ावाजी के प्र"ाासन में **अष्ट प्रधान** नामक आठ मंत्री होते थे जो राजा को पराम"ार्ा देते थे। अष्ट प्रधान मंत्री मंडल नहीं था, प्रत्येक मंत्री राजा के प्रति उत्तरदायी था। ि"ावाजी अष्टप्रधान की सलाह मानने को बाध्य नहीं था।

अष्ट प्रधान निम्नलिखित थे –

1. **पेशवा** :– इसका कार्य संपूर्ण राज्य के शासन की देखभाल करना था, यह प्रधानमंत्री होता था एवं राजा की अनुपस्थिति में उसके कार्यो की देखभाल करता था। ि"ावाजी के समय प्रथम पे"वा शामराज निलकंठ थे। उनके बाद मोरोपन्त पिंगले पे"वा बने।
2. **अमात्य अथा मजुमदार** :– यह वित्त मंत्री था जो राज्य की आय–व्यय की जांच करता था। प्रथम अमात्य बालकृष्ण पंथ हनुमन्ते थे, उसके बाद निलोजी अमात्य बने।

3. **मंत्री अथवा वाकयानवीस** :– यह राज्य की दैनिक गतिविधियों को लिपिबद्ध करता था। राजा के जीवन की सुरक्षा की देखभाल करता था। यह जासूसी विभाग का अध्यक्ष भी था।
4. **सचिव या शुरूनवीस** :– यह राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य देखता था।
5. **दबीर या सुमन्त** :– यह विदे"ा मंत्री था।
6. **सेनापति अथवा सर–ए–नौबत** :– इसका कार्य सेना की भर्ती, संगठन व सेना में अनु"ाासन बनाए रखना था।
7. **पंडित राव या सदर मुहतसिब** :– यह धार्मिक कार्यो व अनुदानों की देखरेख करता था।
8. **न्यायाधीश** :– यह राजा के बाद मुख्य न्यायाधी"ा होता था।

पण्डित राव व न्यायाधी"ा के अतिरिक्त सभी मंत्रियों को अपने असैनिक कर्तव्यों के अतिरिक्त सैनिक जिम्मेदारियां भी पूरी करनी पडती थी। f"ावाजी का राज्य चार प्रान्तों में विभाजित था। प्रत्येक प्रांत एक वायसराय (सूबेदार) के अधिकार में था।

सेना – f"ावाजी की सेना में पैदल व घुडसवार दोनों थे। घुडसवार सैनिक दो प्रकार के होते थे। अ"व सेना को **पागा** कहते थे।

- **बारगीर** – जिन्हें राज्यों की ओर से घोडे व अस्त्र दिए जाते थे।
- **सिलेदार** – वे सैनिक जो घोडे व अस्त्र स्वयं लेते थे।

सर–ए–नौबत समस्त अ"व सेना का प्रधान होता था। f"ावाजी ने मुस्लिमों को भी सेना में भर्ती किया। f"ावाजी ने कोलाबा में एक जहाजी बेडे का भी निर्माण कराया, जो कमानों में था। एक कमान दरिया सारंग तथा दूसरी नायक के अधीन थी। मराठों ने गुरिल्ला युद्ध कला अहमदनगर के मलिक अम्बर से सीखी।

राजस्व प्रशासन – f"ावाजी की राजस्व व्यवस्था अहमदनगर के मलिक अम्बर की **रैयतवाडी प्रथा** पर आधारित थी। इसमें किसानों से सीधा संपर्क स्थापित किया जाता था। f"ावाजी ने भूमि की पैमाई"ा के आधार पर लगान निर्धारित किया तथा भूमि को ठेके पर देने की प्रथा त्याग दी। भूमि के माप की इकाई काठी थी। 20 काठी एक बीघा के बराबर होती थी तथा 120 बीघा एक चंवर के बराबर होती थी। f"ावाजी ने जागीर प्रथा को समाप्त कर दिया। आरंभ में पैदावार का एक तिहाई लगान के रूप में वसूल किया जाता था बाद में यह **40 प्रतिशत** हो गया क्योंकि इसके बदले स्थानीय करों व चुंगी को माफ कर दिया गया। लगान नकद व अनाज दोनो रूपों में दिया जा सकता था। f"ावाजी के आदे"ा पर **'अन्नाजी दत्तों'** ने 1679 ई. में विस्तृत भू सर्वेक्षण करवाया।

चौथ एवं सरदेशमुखी :– चौथ नामक कर के बारे में इतिहासकारों के अलग–अलग मत है। चौथ तीसरी शक्ति के आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करने के बदले वसूल किया जाता था। यदुनाथ सरकार के अनुसार चौथ मराठा आक्रमण से बचने के बदले में वसूल किया जाने वाला कर था। सरदेसाई के अनुसार चौथ विजित क्षेत्रों से वसूल किया जाने वाला कर था। चौथ विजित राज्यों में उपज के एक चौथाई के रूप में वसूल किया जाता था। सरदे"ामुखी आय के 10 प्रति"ात के रूप में अतिरिक्त कर था। यह कर प्रजा से व"ाानुगत सरदे"ामुख होने के नाते लिया जाता था।

न्याय प्रशासन :– गांव के मामलों की सुनवाई पटेल करते थे, अपील की अन्तिम अदालत हाजिर मजलिस थी, जो f"ावाजी की मृत्यु के बाद समाप्त हो गई।

शम्भाजी (1680–1689 ई.)

f"ावाजी की मृत्यु के बाद उसकी पटरानी (सोयरा बाई) अपने पुत्र राजाराम को शासक बनाना चाहती थी किन्तु शम्भाजी ने पन्हाला किले की कैद से मुक्त होकर राजाराम को गद्दी से उतार कर 20 जुलाई, 1680 ई. को गद्दी प्राप्त की। शम्भाजी अभिमानी, क्रोधी व भोगविलासी था। एक उत्तर भारतीय (कन्नौज) ब्राम्हण **'कवि कलश'** उसका सर्वोच्च अधिकारी था। 1681 ई. में शम्भाजी ने औरंगजेब के विद्रोही पुत्र अकबर को शरण दी। फरवरी, 1689 ई. में शम्भाजी को मुगल अमीर ***मुकर्रब खान*** ने संगमेश्वर नामक स्थान पर पकडा। औरंगजेब ने शम्भाजी के सामने इस्लाम स्वीकार करने का विकल्प रखा किन्तु शम्भाजी ने अस्वीकार कर दिया। इस पर 11 मार्च, 1639 ई. में औरंगजेब ने शम्भाजी व कवि कल"ा की यातना देकर हत्या करवा दी तथा उसकी पत्नी येसूबाई और पुत्र शाहू को रायगढ़ के किले में कैद कर लिया।

राजाराम (1669–1700 ई.)

जब शम्भाजी मुगलों द्वारा पकडे गये तो फरवरी, 1689 ई. में राजाराम को मराठा मंत्रिपरिषद् ने राजा घोषित किया व रायगढ़ में ही उसका राज्याभिषेक किया। 1689 ई. में ही राजाराम रायगढ़ पर मुगल आक्रमण की आ"ांका से रायगढ़ छोड कर **जिंजी** चला गया। 1689 ई. तक **जिंजी** मराठों की राजधानी रही। 1699 ई. से **सतारा** मराठों की राजधानी बनी। राजाराम ने अपने को शाहू का प्रतिनिधि माना व कभी गद्दी पर नही बैठा। शम्भाजी की हत्या के बाद राजाराम के नेतृत्व में मराठा स्वतंत्रता संग्राम आरंभ हुआ जो 1707 ई. में मुगलों द्वारा शाहू को मराठा छत्रपति स्वीकार करने तक चलता रहा।

शिवाजी द्वितीय तथा ताराबाई (1700–1707 ई.) – 1700 ई. में राजाराम की मृत्यु के बाद उसकी विधवा ताराबाई ने अपनी चार वर्षीय पुत्र को ि"ावाजी द्वितीय नाम से गद्दी पर बैठाया तथा मुगलों के विरूद्ध स्वतंत्रता संघर्ष जारी करते हुए रायगढ़, सतारा, व सिंहगढ़ आदि किलों को मुगलों से जीता।

शाहू (1707–1749 ई.)

शम्भाजी के पुत्र शाहू को औरंगजेब ने कैद कर रखा था। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्र आजम"ााह को मराठों में फूट डालने के उद्देश्य से जुल्फिकार खॉ की सलाह पर 8 मई, 1707 ई. को शाहू को कैद से मुक्त कर दिया। लेकिन जब शाहू सतारा, पहुंचे तब तक ताराबाइ ने ि"ावाजी द्वितीय को छत्रपति घोषित कर दिया थां शाहू को मुगलों की कैद में ही राजा की उपाधि और मनसब भी दिया गया। शाहू ने बालाजी वि"वनाथ की मदद से धन्नाजी जादव की अपने पक्ष में कर लिया तथा **खेडा** (खेद)के युद्ध (12 अक्टुबर, 1707 ई.) में ताराबाई को परास्त किया। 1708 ई. में शाहू ने सतारा को जीत लिया। अब ताराबाई ि"ावाजी द्वितीय को लेकर कोल्हापुर चली गई।

मराठा राज्य दो भागों में बंट गया। **सतारा शाहू के नियंत्रण में रहा व कोल्हापुर शिवाजी द्वितीय या ताराबाई के नियंत्रण में रहा।** ि"ावाजी द्वितीय के बाद राजाराम का दूसरा पुत्र शम्भाजी द्वितीय कोल्हापुर की गद्दी पर बैठा। शम्भाजी द्वितीय राजाराम की दूसरी पत्नी राजसबाई का पुत्र था। राजसबाई ने 1714 ई. में ताराबाई व ि"ावाजी द्वितीय को बंदी बना लिया। 1731 ई. की **वारना की संधि** द्वारा सतारा व कोल्हापुर की शत्रुता समाप्त हुई इस सन्धि द्वारा शम्भाजी द्वितीय को मराठा राज्य के दक्षिणी भाग (राजधानी–कोल्हापुर) पर शासन करने का अधिकार मिला व उत्तरी भाग जिसकी राजधानी सतारा थी पर शाहू का शासन रहा। शाहू ने 1708 ई. में बालाजी वि"वनाथ को सेनाकर्ते (सेना व्यवस्थापक) का पद दिया व 1713 ई. में उसे पे"ावा बनाया। शाहू निः संतान थे अतः उन्होने अपनी मृत्यु से पूर्व 1749 ई. में ताराबाई के पौत्र राजाराम द्वितीय को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। 1750 ई. में राजाराम द्वितीय व तत्कालीन पे"ावा बालाजी बाजीराव के मध्य रघुजी भोंसले की मध्यस्थता से **संगोला की सन्धि** से मराठा छत्रपति नाममात्र के शासक रह गए एवं पे"ावा पद व"ाानुगत बना दिया गया। पे"ावा वास्तविक शासक बन गये व राजनीति का केन्द्र पूना हो गया। राजाराम के बाद शाहू द्वितीय उत्तराधिकारी हुआ। नाना फडनवीस ने शाहू द्वितीय को मिलन वाले भत्ते में कमी कर दी। 1848 मे सतारा पहला राज्य बना जिसका डलहौजी ने विलय नीति के अंतर्गत ब्रिटिश साम्राज्य मे विलय कर लिया था।

पेशवाओं का काल

बालाजी विश्वनाथ (1713–1720 ई.)

बालाजी वि"वनाथ कोंकण के चित्तपावन ब्राम्हण थे। पहले ये राजस्व अधिकारी थे। 1713 ई. में बालाजी वि"वनाथ को शाहू ने पे"वा बना दिया। बालाजी वि"वनाथ ने मुगलों व मराठों के मध्य स्थाई समझौता कराया जिसमें दोनों पक्षों के अधिकारों व प्रभाव क्षेत्रों की व्याख्या की गई थी। फरवरी, 1719 ई. में बालाजी ने मुगल सूबेदार सैयद हुसैन से सन्धि की, इस संधि की शर्ते थी –

1. शाहू का स्वराज्य क्षेत्र में राजस्व वसूली का अधिकार मान लिया गया।
2. मराठों को दककन के 6 मुगल सूबों तथा मैसूर त्रिचनापल्ली व तंजौर में चौथ व सरदे"मुखी वसूल करने के अधिकार को मान्यता दी गई।
3. गोंडवाना, बरार, खानदे"ा, हैदाराबाद व कर्नाटक में नये विजित मराठा क्षेत्रों पर मराठों के अधिकार को मान्यता दी गई।
4. मुगल बाद"ाह शाहू की माता व अन्य संबंधियों को छोड देगा।
5. स्वराज्य की मान्यता के बदले शाहू को मुगलों की सहयाता हेतु 15,000 सैनिक रखने थे तथा चौथ व सरदे"मुखी के बदले मुगल क्षेत्रों में लूटमार न करने का वचन दिया व मुगल बाद"ाह को दस लाख रूपये सालाना नजराना देने की बात मानी।

1719 ई. की मुगल–मराठा संधि के बाद बालाजी वि"वनाथ एक सेना लेकर सैयद बन्धुओं की मदद के लिए दिल्ली पहुंचे व फर्रूखसियर को हटाने में सैयद बन्धुओं की मदद की। यह पहला अवसर था जब मराठा सेना मुगल दरबार में दिल्ली पहुॅची व मुगलों की कमजोरी को नजदीकी से देखा। इतिहासकार रिचर्ड टेम्पेल ने 1719 ई. की एक मराठा मुगल संधि को '**मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा**' कहा। बालाजी वि"वनाथ की सबसे बडी उपलब्धि यह थी कि उन्होने मराठा राज्य संघ का गठन किया। वे मराठा साम्राज्य के '**द्वितीय संस्थापक**' के रूप में प्रसिद्ध थे। बालाजी वि"वनाथ ने अपने परिवार के लिए पे"वा का पद व"ानुगत बना दिया।

बाजीराव प्रथम (1720–1740)

1720 ई. में बालाजी वि"वनाथ की मृत्यु के बाद शाहू ने उनके पुत्र बाजीराव प्रथम को पे"वा बनाया। बाजीराव के अधीन मराठा शक्ति चरमोत्कर्ष पर पहुॅच गई उसने मराठा शक्ति को उत्तर में विस्तार करने की नीति अपनाई व '**कृष्णा से अटक तक**' का नारा दिया। अपने प्रयत्न से बाजीराव ने मराठों को भारत में प्रथम श्रेणी की शक्ति बना दिया। बाजीराव प्रथम लड़ाकू पे"वा कहे जाते थे। बाजीराव प्रथम मुगल साम्राज्य के पतन से परिचित थे। उन्होंने कहा था कि '**हमे इस जर्जर वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए, शाखाएं तो स्वयं ही गिर जाएगी**'।

1728 ई. में बाजीराव प्रथम ने निजामुल मुल्क को **पालखेडा** के युद्ध में पराजित किया व 6 मार्च, 1728 ई. को **मुंगी शिवगांव** की सन्धि हुई जिसमें निजाम ने मराठों को चौथ व सरदे"मुखी देना स्वीकार किया। दिसम्बर 1728 ई. में धार क निकट अमझेरा के युद्ध में बाजीराव प्रथम के भाई चिमनाजी अप्पा ने **मालवा** के मुगल सूबेदार गिरधर बहादुर को पराजित कर मार डाला व मालवा छीन लिया। 1732 ई. में बाजीराव ने **गुजरात** को भी मुगलों से छीन लिया। इस समय गुजरात का गवर्नर जोधपुर का महाराजा अभयसिंह था जो बिना लडे ही जोधपुर वापस चला गया। **बुंदेलखण्ड** के छत्रसाल बुंदेला को भी 1730 ई. में इलाहाबाद के मुगल गवर्नर मुहम्मद खॉ बंगस की कैद से मुक्त कराया। छत्रसाल ने आधा बुंदेलखण्ड राज्य बाजीराव को जागीर में दिया।

1731 ई. की वारना की संधि द्वारा शम्भाजी द्वितीय द्वारा शाहू की अधीनता स्वीकार कर ली गई। 1732 ई. में बाजीराव ने एक इकरारनामा तैयार किया जिसमें मल्हार राव होल्कर, रानोजी सिन्धिया, दत्ताजी गायकवाड तथा रघुजी भोंसले के हिस्सों की व्यवस्था की गई। इस समझौते ने चार भावी मराठा रियासतों की आधार ि"ाला रखी। बाजीराव ने 1733 ई. में जंजीरा के सिद्दियों के विरूद्ध अभियान किया व उन्हें मुख्य भूमि से खदेड दिया। मार्च, 1737

ई. में बाजीराव प्रथम ने 500 घुडसवारों के साथ दिल्ली पर दुतगामी आक्रमण किया और 14 दिन का सफर 2 दिन में तय कर मुगल बाद"ाह मुहम्मद"ाह के महल में पहुॅच गया। इसके बाद जुलाई, 1737 ई. में मुगल बाद"ाह ने निजाम को मराठों से युद्ध के लिए भेजा किन्तु दिसम्बर 1737 ई. में भोपाल के युद्ध में निजाम बाजीराव से पुनः पराजित हुआ व इस युद्ध के परिणामस्वरूप 17 जनवरी, 1738 ई. को **दुरई–सराय** की सन्धि हुई। जिसके अनुसार निजाम ने संपूर्ण मालवा प्रदे"ा, गुजरात व नर्मदा से चंबल के इलाके मराठों को सौंप दिये। उत्तर भारत में मराठों ने सर्वप्रथम मालवा में पैर जमायें 1739 ई. में बाजीराव ने पुर्तगालियों से **सालसीट व बसीन** छीन लिए। बाजीराव प्रथम ने **हिन्दूपादशाही** का आद"ार रखा। बाजीराव प्रथम की रखैल मस्तानी के कारण बाजीराव का पारिवारिक जीवन अत्यन्त तनावपूर्ण रहा। बाजीराव प्रथम को वृहद महाराष्ट्र की स्थापना का श्रेय दिया जाता है, प्रमुख मराठा राज्यों का उदय हुआ। 1750 ई. तक मराठा राज्य पे"ावा के नेतृत्व में एक **राज्य संघ** बन गया। मराठा संघ के पॉच सदस्य थे :–

1. पूना का पेशवा **2. नागपुर के भोंसले** **3. बडौदा के गायकवाड**
4. ग्वालियर के सिंधिया **5. इंदौर के होल्कर**

बालाजी बाजीराव (1740–1761 ई.)

बाजीराव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र बालाजी बाजीराव पे"ावा बना। बालाजी बाजीराव **नाना साहब** के नाम से भी प्रसिद्ध थे, उन्हें बालाजी द्वितीय भी कहा जाता था। इनके काल में मराठा शक्ति पराकाष्ठा पर पहुंच गई। 1741 ई. में मुगल बाद"ाह मुहम्मद शाह ने मालवा पर मराठों के अधिकार को वैधता प्रदान कर दी। 1750 ई. में रघुजी भोंसले की मध्यस्थता से रामराजा व पे"ावा के बीच '**संगोला की सन्धि**' हुई। इस सन्धि द्वारा मराठा छत्रपति केवल नाममात्र के राजा रह गए व सतारा के कैदी बन गये। पे"ावा वास्तविक मराठा नेता बन गए व मराठा राजनीति का केन्द्र पूना हो गया। 1752 ई. में पे"ावा ने मुगल बाद"ाह अहमद शाह से सन्धि की। इस सन्धि में मुगल बाद"ाह ने मराठों को संपूर्ण भारत में चौथ वसूली का अधिकार दिया।

1754 ई. में रघुनाथ राव के नेतृत्व में मराठों ने दिल्ली में प्रवे"ा कर अहमद"ाह को सिंहासन से हटाकर आलमगीर द्वितीय को मुगल बाद"ाह बनाया तथा 1757 में रघुनाथ राव के नेतृत्व में ही पुनः दिल्ली पर आक्रमण कर अहमद"ाह अब्दाली के प्रतिनिधि नजीब–उद–दौला को मीर बख्शी के पद से हटाकर अहमद"ाह वंग"ा को मीरबख्शी बनाया। 1758 ई. में रघुनाथ राव ने सरहिन्द व लाहौर पर भी अधिकार कर लिया तथा अहमद"ाह अब्दाली द्वारा नियुक्त पंजाब के सूबेदार तैमूर खॉ को भगा दिया।

पानीपत का तीसरा युद्ध (14 जनवरी, 1761 ई.) :– इस युद्ध का प्रमुख कारण रघुनाथराव की अटक तक मराठा प्रभाव बढाने की कूटनीतिक भूल थी, क्योकि इस समय पंजाब के क्षेत्र पर अब्दाली या उसके आदमियों का कब्जा था। जबकि अहमद"ाह अब्दाली नादिर"ाह की भांति भारत को लूटना चाहता था। अब्दाली ने 1748–1761 ई. के बीच भारत पर कुल सात आक्रमण किये। रूहेला सरदार नजीबुद्दौला व अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने अहमद"ाह अब्दाली का साथ दिया, क्योकि ये मराठों से पराजित हो चुके थे। एक मात्र मुगल वजीर **इमादुलमुल्क** ने मराठों को समर्थन दिया।

जनवरी 1760 ई. में दिल्ली के निकट लोनी में अब्दाली व मराठा नेता दत्ताजी के बीच युद्ध हुआ, इसमें दत्ताजी मारा गया। दत्ताजी की मृत्यु की खबर सुन पे"ावा ने अपने 17 वर्षीय पुत्र वि"वासराव भाऊ के नेतृत्व शक्ति"ाली सेना भेजी किन्तु वास्तविक सेनापति उसका चचेरा भाई '**सदाशिवराव भाऊ**' (बाजीराव प्रथम के छोटे भाई चिमनाजी अप्पा का पुत्र) था। मराठों के पास **इब्राहिम गार्दी** के नेतृत्व में एक तोपखाना था। इब्राहिम खॉ गार्दी युद्ध भूमि में ही मारा गया। पानीपत के तीसरे युद्ध से पहले भरतपुर के जाट शासक महाराजा **सूरजमल** ने मराठों को सलाह दी कि वे औरतों व बच्चों को अपने साथ न ले जाये, क्योंकि इससे उनकी युद्ध क्षमता व गति"ालता प्रभावित होती है लेकिन मराठों ने उनकी सलाह नहीं मानी। इस पर जाटों ने युद्ध से पहले ही मराठों का साथ छोड दिया व तटस्थ रहे।

14 जनवरी, 1761 ई. को प्रातः 9 बजे मराठों ने आक्रमण किया। **मल्हार राव होल्कर** युद्ध के बीच ही भाग निकला। युद्ध में मराठे बुरी तरह पराजित हुए। वि"वासराव, सदा"िावराव भाऊ, जसवन्तराव पवार, तुकोजी होल्कर, जनकोजी सिन्धिया आदि समेत करीब 28000 मराठा सैनिक मारे गये। 1761 ई. का आक्रमण अब्दाली का

भारत पर पांचवा आक्रमण था। पानीपत के तृतीय युद्ध में पराजय की सूचना एक व्यापारी ने पे"वा को इस संदे"ा के रूप में दी। **'दो मोती विलीन हो गये, बाईस सोने की मुहरें लुप्त हो गई और चांदी तथा तांबे की तो पूरी गणना हीं नहीं की जा सकती'**। पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों की पराजय को बालाजी बाजीराव सहन न कर सके और 23 जून, 1761 ई. का उसकी मृत्यु हो गई। **काशीराज पंडित** ने पानीपत का युद्ध अपनी ऑखों से देखा।

पानीपत में पराजय के कारण :–

मराठों की पराजय का प्रमुख सदा"िावराव की कूटनीतिक असफलता व अब्दाली की तुलना में उसका दुर्बल सेनापतित्व था।

माधवराव प्रथम (1761–1722 ई.)

23 जून, 1761 ई. को बालाजी बाजीराव की मृत्यु के बाद उसका 17 वर्षीय छोटा पुत्र माधवराव प्रथम पे"वा बना। माधवराव प्रथम ने 1763 ई. में निजाम को पराजित कर **'राक्षस–भुवन'** की सन्धि की। माधवराव प्रथम व निजाम के बीच इस सन्धि से मराठा निजाम संबंधों में ठहराव आ गया। 1771 ई. में मैसूर के हैदर अली को पराजित किया तथा उत्तर भारत पर भी अपना अधिकार मराठों ने पुनः स्थापित किया।

1771 ई. में मराठा सरदार महादजी सिन्धिया ने निर्वासित मुगल बाद"ाह शाह आलम द्वितीय को पुनः दिल्ली की गद्दी पर बैठाया तथा प"वा को मुगल बाद"ाह के सहायक के रूप में नियुक्त करवाया। नवम्बर 1772 ई. में माधवराव की क्षयरोग से अकाल मृत्यु हो गई। वह अन्तिम सफल पे"वा था।

नारायण राव (1772–73 ई.)

यह माधवराव का छोटा भाई था किन्तु इसका चाचा रघुनाथ राव (राघोबा) पे"वा बनना चाहता था, अतः राघोबा ने नारायण राव की 30 अगस्त 1773 ई. को हत्या कर दी।

माधवराव नारायण (1774–96 ई.)

नारायण राव की हत्या के बाद मराठों की बाराभाई परिषद् ने उसकी मृत्यु के बाद जन्मे पुत्र को माधवराव नारायण के नाम से गद्दी पर बैठाया। वास्तविक शासन नाना फडनवीस के अधीन एक शासन परिषद् के हाथ में था। मराठों ने निजाम को 1795 ई. में खारदा के युद्ध में पराजित किया। अन्त में 1796 ई. में माधवराव नारायण ने नाना फडनवीस के नियंत्रण से दुखी होकर आत्महत्या कर ली।

बाजीराव द्वितीय (1796–1818 ई.)

माधवराव नारायण की आत्महत्या के बाद राघोबा का पुत्र बाजीराव द्वितीय पे"वा बना। यह अन्तिम पे"वा था। बाजीराव द्वितीय ने 1802 ई. में अंग्रेजों ने 1818 ई. में पे"वा पद समाप्त कर दिया व उसे पें"न देकर **बिठूर (कानपुर)** भेज दिया।

मुगल साम्राज्य का पतन एवं स्वतंत्र राज्यों का उदय

3 मार्च, 1707 ई. को अहमदनगर में औरंगजेब की मृत्यु हो गई व मुगल साम्राज्य का पतन तीव्र गति से शुरू हो गया। औरंगजेब ने अपनी वसीयत छोडी थी जिसके अनुसार उसकी मृत्यु के उपरांत मुगल साम्राज्य को उसके तीन जीवित पुत्रों में बांटा जाना था किन्तु औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुअज्जम, आजम व कामबख्श में उत्तराधिकार संघर्ष हुआ।

बहादुरशाह (1707–1712 ई.)

18 जून, 1707 ई. को मुअज्जम सेनाओं ने आजम को सामूगढ के निकट जाजऊ के युद्ध में पराजित किया व आजम मारा गया, मुअज्जम ("ाहआलम) '**बहादुरशाह**' की उपाधि के साथ दिल्ली का बाद"ााह बना। बहादुर"ााह 65 वर्ष की आयु में बाद"ााह बना। बहादुर"ााह ने औरंगजेब द्वारा लगाया गया जजिया कर समाप्त कर दिया। सिख नेता बंदाबहादुर के विरूद्ध सैन्य अभियान के दौरान 27 फरवरी, 1712 ई. को बहादुर"ााह की मृत्यु हो गई। बहादुर"ााह की मृत्यु के बाद लडे गये उत्तराधिकार युद्ध में उसके पुत्रों ने इतनी निर्लज्जता दिखाई कि बहादुर"ााह का शव एक माह तक बिना दफनाये पडा रहा। सिडनी ओवन के अनुसार यह अन्तिम मुगल बाद"ााह था जिसके बारे में कुछ अच्छे शब्द कहे जा सकते है। इतिहासकार ***खफी खॉ*** के अनुसार बहादुर"ााह शासन कार्यो के प्रति इतना लापरवाह था कि लोग उसे '**शाहे बेखबर**' कहते थे।

जहॉदारशाह (1712–13 ई.)

बहादुर"ााह का पुत्र जहॉदार"ााह अपने भाई अजीम–उस–"ाान, रफी–उ"ा–"ाान तथा जहान शाह की हत्या कर मुगल बाद"ााह बना। एक शक्ति"ाली ईरानी अमीर **जुल्फिकार खॉ** ने जहॉदार शाह को सिंहासन प्राप्त करने के मदद की। जुल्फिकार खॉ को बाद"ााह ने अपना वजीर बनाया। जहॉदार"ााह ने आमेर के राजा **सवाई जयसिंह** को **मिर्जा राजा सवाई** की उपाधि दी व सात हजार के मनसब के साथ मालवा का सूबेदार बनाया तथा मारवाड के राजा अजीत सिंह को महाराज की उपाधि देकर गुजरात का सूबेदार बनाया। जहॉदार शाह अत्यधिक भ्रष्ट व अनैतिक चरित्र का व्यक्ति था तथा लाल कुंवर नामक एक रखैल का उस पर काफी प्रभाव था। जहॉदार शाह को अर्जामु"शान के पुत्र फर्रूखी"ायर ने हिन्दुस्तानी अमीर सैयद बन्धुओं के सहयोग से अपदस्थ कर दिया। जहॉदार शाह अपनी प्रेमिका लाल कुंवर के साथ भाग गया। जहॉदार"ााह को **लम्पत मूर्ख** भी कहते है। खफी खॉ के अनुसार जहॉदार शाह का समय गायको, नृत्यकों व नाट्य कर्मियों के लिए अनुकूल था।

फर्रूखसियर (1713–19 ई.)

फर्रूखसियर **सैयद बन्धुओं (अब्दुल्ला खॉ और हुसैन अली खॉ)** के सहयोग से बाद"ााह बना। फर्रूखसियर ने अब्दुल्ला खॉ को साम्राज्य का वजीर व हुसैन अली खॉ को मीर बख्शी (सेनापति) बनाया। सैयद बन्धु हिन्दुस्तानी गुट के अमीर थे। सैय्यद बन्धु इतिहास में '**राजा बनाने वाले**' के नाम से जाने जाते है। फर्रूखसियर ने तूरानी गुट (मध्य एशिया मूल) के एक अमीर चिनकिलिच खॉ को दक्कन के छः मुगल सूबों की सूबेदारी प्रदान की तथा उसे निजामुल मुल्क और खान खाना की उपाधि दी। एक अंग्रेज डॉक्टर हैमिल्टन ने फर्रूखसियर के एक असाध्य रोग की चिकित्सा की जिससे प्रसन्न होकर 1717 ई. में अंग्रेजो को बिना सीमा शुल्क व्यापार करने की छूट प्रदान की गई। इसे '**ईस्ट इंडिया कंपनी का मैग्नाकार्टा**' कहा गया है। फर्रूखसियर ने सैय्यद बन्धुओं के प्रभाव को कम करने के लिए उनके खिलाफ 'ाडयंत्र रचने शुरू किए। हुसैन अली ने पेशवा '**बालाजी विश्वनाथ**' से 1719 ई. में '**दिल्ली की सन्धि**' की जिसके तहत उसने समस्त दक्षिण में चौथ व सरदे"ामुखी वसूल करने का अधिकार शाहू को दे दिया। हुसैन अली खॉ मराठा सैनिको के साथ दिल्ली आ गया व सैय्यद बन्धुओं ने महत्वपूर्ण अमीरों को अपने पक्ष में कर फर्रूखसियर को अपदस्थ कर 28 अप्रैल, 1719 ई. को उसका वध कर डाला। फर्रूखसियर की मृत्यु के बाद सैय्यद बन्धुओं ने रफी–उ"ा–"ाान के दो पुत्रों रफी–उद–दरजात व रफी–उद–दौला को क्रम"ाः सम्राट बनाया। रफी उद् दरजात सबसे कम समय के लिए शासन करने वाला मुगल शासक था। इसके बाद रफी–उद–दौला (6 जून, 1719 से 17 सितम्बर, 1719तक) सबसे कम समय तक शासन करने वाला मुगल शासक था। इसने 3 माह 11 दिन तक शासन

किया। फर्रूखसियर को घृणित कायर भी कहा गया है। फर्रूखसियर ने गद्दी पर बैठते ही जजिया कर को समाप्त कर दिया। यद्यपि मुगल शासकों म जजिया कर अन्तिम रूप से मुहम्मद शाह रंगीला द्वारा 1720 ई. में हटाया गया।

मुहम्मद शाह (1719–1748 ई.)

मुहम्मद शाह ने सैय्यद बन्धुओं के खिलाफ निजामुल मुल्क, सआदत खॉ, हैदर खॉ, मुहम्मद अमीन खॉ एवं एतमादुद्दौला के साथ मिलकर 'ांड्यंत्र रचा। हैदर खॉ ने 1720 में हुसैन अली की हत्या कर दी। 1722 में अब्दुल्ला खॉ की जहर देकर हत्या कर दी गई। मुहम्मद शाह के साथ में उर्दू व संगीत का सर्वाधिक विकास हुआ। सदारंग व अदारंग उसके प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। मुहम्मद शाह को उसके विलासी आचरण के कारण '**रंगीला**' कहा गया है। आधुनिक उर्दू शायरी के जन्मदाता '**वली दक्कनी**' को उनकी उर्दू शायरी के लिए मुहम्मद शाह ने सम्मानित किया था।

नादिरशाह का आक्रमण (1739 ई.) :– मुहम्मद शाह ने नादिर"ाह के विरोधियों को शरण दी थी तथा मुगल सैनिकों ने नादिर"ाह के दूत की जलालाबाद में हत्या कर दी, जिससे क्रुद्ध होकर ईरान के नेपोलियन के नाम से प्रसिद्ध नादिर"ाह ने 1739 में भारत पर आक्रमण किया तथा 13 फरवरी को कर्नाल के युद्ध में मुगल सेना को बुरी तरह से पराजित किया। निजामुल मुल्क ने 50 लाख रूपये देकर नादिर"ाह को वापस जाने के लिए सहमत किया किन्तु अवध के नवाब सआदत खॉ ने नादिर"ाह को सलाह दी कि अगर दिल्ली पर आक्रमण किया जाये तो उसे लूट में 20 करोड रूपये मिल सकते है। नादिर"ाह ने 20 मार्च, 1739 ई. को दिल्ली में प्रवे"ा किया व अगले 57 दिनों तक दिल्ली में भयंकर लूटपात व कत्ले आम करता रहा। नादिर"ाह भारत से शाहजहॉ द्वारा निर्मित मुगल सिंहासन तख्ते ताउस व वि"व के सबसे महंगे हीरे कोहिनूर को भी ले गया। उसने कुल 70 करोड की लूट की।

अहमदशाह (1748–1754 ई.)

1748 ई. में मुहम्मद"ाह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अहमद"ाह सम्राट बना। उसने अवध के सूबेदार **सफदरजंग** को अपना वजीर बनाया। अहमद शाह के समय राजमाता उधमबाई का प्र"ासन में अत्यधिक हस्तक्षेप था। मराठा सरदार मल्हार राव के सहयोग से **इमादुलमुल्क** (इमाम–उल–मुल्क) ने सफदरजंग को अपस्थ कर दिया व खुद मुगल साम्राज्य का वजीर बन गया। इमादुल मुल्क का वास्तविक नाम गाजीउद्दीन था तथा वह निजाम–उल–मुल्क का पुत्र था। 2 जून, 1754 ई. को वजीर इमादुलमुल्क ने मराठों के सहयोग से अहमद"ाह को अपदस्थ कर दिया व अजीजुद्दीन को आलमगीर द्वितीय की उपाधि के साथ मुगल बाद"ाह बनाया। अजीजुद्दीन जहॉदार शाह का बेटा था।

आलमगीर द्वितीय (1754–59 ई.)

अब्दाली ने 1756 ई. में चौथा आक्रमण किया जिसमें उसने मुगल सम्राट आलमगीर द्वितीय से पंजाब, क"मीर, सिंध तथा सरहिन्द के जिलों को प्राप्त किया। 29 नवम्बर 1759 ई. को वजीर इमादुल मुल्क ने बाद"ाह आलमगीर द्वितीय की हत्या कर दी।

शाह आलम द्वितीय (1759–1806 ई.)

शाह आलम का असली नाम **अलीगौहर** था। 1772 ई. में महादजी सिन्धिया ने शाह आलम द्वितीय को दिल्ली को राजगद्दी पर बैठाया। 1761–70 ई तक नजीबुद्दोला दिल्ली का ताना"ाह था। शाह आलम द्वितीय ने 1764 ई. में अंग्रेजो के विरूद्ध लडे गए बक्सर के युद्ध म बंगाल के अपदस्थ नवाब मीर कासिम का साथ दिया। पराजित होने पर शाह आलम द्वितीय अंग्रेजो से 1765 ई. में इलाहबाद की संधि कर ली व 1772 ई. तक इलाहबाद में अंग्रेजों का पें"ानर बन कर रहा। 1780 ई. में रूहेला सरदार गुलाम कादिर (नजीबुद्दौला का पोता) ने शाह आलम द्वितीय को अंधा कर दिया व गद्दी से हटाकर बेदार बख्त को सिंहासन पर बैठाया। 1803 ई. में अंग्रेजों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया व शाह आलम अंग्रेजों का कैदी बन गया।

अकबर द्वितीय (1806–1837 ई.)

अकबर द्वितीय शाह आलम द्वितीय का पुत्र था। अंग्रेजों के संरक्षण म बनने वाला वह प्रथम मुगल बाद"ाह था। अब बाद"ाह लाल किले का कैदी मात्र रह गया।

बहादुर शाह द्वितीय जफर (1837-62 ई.)

बहादुर शाह द्वितीय **अन्तिम मुगल बादशाह** हुआ वह जफर उपनाम से शायरी लिखा करता था। 1857 ई. की क्रान्ति के दौरान विद्रोहियों ने बहादुर शाह को हिन्दुस्तान का बाद"ाह नियुक्त किया। विद्राहियों का साथ देने के कारण अंग्रेजो ने इन्हे गिरफ्तार कर रंगून निर्वासित कर दिया। **रंगून** में ही 1862 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।

अठारहवीं शताब्दी के स्वतंत्र व स्वायत राज्य

बंगाल

मुर्शीद कुली खॉ (1717–27 ई.) :– बंगाल में स्वतंत्र राज्य की नींव मुर्शीद कुली खां ने डाली। वह बाद"ाह द्वारा सीधे तौर पर नियुक्त बंगाल का अन्तिम गवर्नर था। मु"ार्शीद कुली खां 1704 ई. में बंगाल की राजधानी **ढाका** से **मुर्शिदाबाद** ले गया। मुर्शीद कुली खॉ ने बंगाल में राजस्व वसूली को सुदृढ किया इसके लिये छोटे जमीदारों का उन्मूलन किया, बड़े जमीदारों को प्रोत्साहित किया व खालसा भूमि के विस्तार किया व **इजारेदारी प्रथा** को बढावा दिया। मुर्शीद कुली खॉ इजारेदार कहलाने वाले अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से रैयतों से सीधा राजस्व एकत्र करता था।

शुजाउद्दोन (1727–39 ई.) :– यह मुर्शीद का उत्तराधिकारी बना व मुगल दरबार में राजस्व भेजता रहा लेकिन व्यवहार में पूर्णतः स्वतंत्र रहा। शुजाउद्दीन का उत्तराधिकारी उसका पुत्र सरफराज बना जिसने **आलम–उद–दौला हैदर जंग** की उपाधि धारण की तथा इसको बिहार के नायब सूबेदार अलीवर्दी खॉ ने 1740 ई. में घेरिया (गिरिया) के युद्ध में पराजित कर मार डाला। सरफराज ने मुगल दरबार को दिये जाने वाले कर में कमी कर दी।

अलीवर्दी खॉ (1740–56) :– अलीवर्दी खॉ के काल से बंगाल दिल्ली से पूर्ण स्वतंत्र हो गया। अलीवर्दी खॉ को दिल्ली से **महावत जंग** की उपाधि भी मिली थी। अलीवर्दी खॉ ने अंग्रजों द्वारा कलकत्ता व फ्रांसिसयों द्वारा चन्द्रनगर की किलेबन्दी का विरोध किया। अलीवर्दी खॉ ने मृत्यु से पूर्व अपने नाती सिराजुद्दौला को अपना अधिकारी नियुक्त किया। अलीवर्दी खॉ ने यूरोपीय लोगों के बारे में कहा था कि **'ये मधुमक्खी के समान है यदि उन्हें न छेडा जाये तो वे शहद देंगी और यदि छेडा जाये तो वो डंक मारेगी।'**

अवध

स्वतंत्र अवध राज्य की स्थापना 1722 ई. में **'सआदत खॉ बुरहान मुल्क'** ने की। 1739 ई. में नादिर शाह ने भारत पर आक्रमण किया तो उसने सआदत खॉ से 20 करोड रूपये मांगे। जिसे न दे सकने के कारण सआदत खॉ ने आत्महत्या कर ली।

सफदरजंग (1739–54 ई.) – सआदत खॉ के बाद उसका भतीजा तथा दामाद सफदरजंग अवध का नवाब बना।

शुजाउद्दौला (1754–75 ई.) – शुजाउद्दौला ने शाह आलम द्वितीय को लखनऊ में शरण दी व पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमद"ाह अब्दाली का साथ दिया।

आसफ–उद–दौला(1775–97 ई.)– इसके समय में 1775 ई. में कम्पनी के साथ फैजाबाद में सन्धि हुई जिसके अनुसार

- ❖ नबाब एक अतिरिक्त अंग्रेजी सेना की टुकडी अपने खर्चे पर रखेगा।
- ❖ कम्पनी आसफ–उद–दौला के मंत्रियों की नियुक्ति करेगी।

यह राजधानी **फैजाबाद से लखनऊ** ले गया। इसने वारेन हेस्टिंग्स के साथ मिलकर अवध की बेगमों से जबरन धन छीना। सआदत अली (1797–1814 ई.) ने लार्ड वैलेजली से 1801 ई. में सहायक संधि कर ली। अवध का अन्तिम नवाब **वाजिद अली शाह** (1847–56 ई.) था जो **'रंगीलाशाह'** के नाम से भी प्रसिद्ध था। वाजिद अली शाह का एक अन्य उपनाम **अख्तर पिया** भी था। 1848 ई. में लार्ड डलहौजी ने भारत आते ही कर्नल **स्लीमेन** को अवध के दौरे पर भेजा उसने अवध की स्थिति दयनीय बताई, पर अवध विलय का विरोध किया।